31 / 12 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

बाप दादा की बधाई का पात्र बनने की अनुभूति

➢➢ बुद्धि के विमान द्वारा मधुबन की सैर का अनुभव

➳ _ ➳ मैं ब्राह्मण आत्मा

➳ _ ➳ प्रीत की रीति निभाने वाले

➳ _ ➳ अपने मन के मीत से मिलने मधुबन आ पहुंची हूं

→ मधुबन अल्लाह का बगीचा है

→ जिसमें दूर दूर से सर्व आत्माएं

→ न्यू ईयर मनाने बाप दादा की बगिया में आ गई हैं

◆ मैं आत्मा लग्न में मगन हूँ

◆ और दिल से पिया मिलन का गीत गा रही हूं

➳ _ ➳ मैं आत्मा स्वयं को डायमंड हॉल में देख रही हूं

→ बापदादा मिलन की वह घड़ी आ गई है

→ मैं आत्मा स्टेज के समीप बैठी हूं

→ सब खुदा दोस्त का आवाहन कर रहे हैं

◆ चारों ओर वायुमंडल स्नेह से परिपूर्ण है

◆ मधुर संगीत के साज़ बज रहे है

◆ और बाप दादा की पधार मणि होती

◆ खुदा दोस्त बच्चों को दृष्टि दे रहे हैं

● बाबा की दृष्टि मुझ आत्मा पर पड़ती है

● रोमांचित हो मुझ आत्मा के दिल से यही बोल निकलता है

● बाबा तुम ही मेरे हो

● बाबा ने प्यार भरी दृष्टि दी और कहा

● बच्चे तुम मेरे हो

➳ _ ➳ बापदादा हर बच्चे को बधाई दें

➳ _ ➳ वरदानो की वर्षा कर रहे हैं

→ बच्चे तुम सर्व खजानों से संपन्न आत्मा हो

→ देह के सर्व रिश्तो से पार उड़ने वाली

→ रूहानी फरिश्ता हो

◆ बापदादा द्वारा वरदानो से झोली भरपूर कर

◆ मैं आत्मा संपन्न अनुभव कर रही हूं

➢➢ धीरे -धीरे बुद्धि के विमान द्वारा साकारी तन में पुनः वापस आती हूं

➳ _ ➳ स्वयं को अपने लौकिक परिवार में देख रही हूं

→ लौकिक संबंधों में अलौकिकता को देखती

→ मैं आत्मा सर्व के प्रति शुभ भावना रखती हूं

→ बापदादा द्वारा मिले गोडली गिफ्ट को

→ हर आत्मा प्रति हर दिन, हर सेकंड यूज कर सफल कर रही हूं

◆ धीरे- धीरे सब लौकिक सगे संबंधी

◆ बाबा की और खींचते जा रहे हैं

◆ सर्व पर परमात्म प्यार का रंग चढ़ गया है

● सब बाबा- बाबा की डायमंड की द्वारा

● अपना भाग्य बना रहे हैं

- लौकिक अलौकिक में परिवर्तन हो चुका है
- और मैं आत्मा इस संगम युग पर
- आने वाले सतयुग की झलक देख आनंद रस में खो गई हूँ